जो क्रूज़

रंगीन प्रसाधन सामग्री और आभूषण

Copyright © 2009, 2024
by Lu Ann Crews

All rights reserved.
Printed in India.

Published by:
Amazing Facts India
Post Box No 51
Banjara Hills, Hyderabad
Telangana, 500034

www.AmazingFactsIndia.org

रंगीन प्रसाधन सामग्री और आभूषण

० जो क्रूज़ ०

आग से बचा धर्म 2
रंगीन प्रसाधन सामग्री और आभूषण 12
रुकावटें 32

अध्याय-1
आग से बचा धर्म

लोगो द्वारा धर्म के खिलाफ सबसे अधिक लगातार और गलत शिकायतों में से एक यह है कि यह बहुत अधिक प्रतिबंधात्मक है। इस उन्मुक्त युग में जब सारा जोर "अपना काम खुद करना" लगता है, स्वेच्छा की एक अनुचित प्रवृत्ति विकसित हो गई है। "इस रवैये ने धर्म में भी घुसपैठ कर ली है। कलीसिया के संस्करण और गैर सदस्य उसे उसी चीज की तलाश में लगाते है, एक ऐसा धर्म जो व्यक्तिगत अधिकारों और स्वतंत्रता में हस्तक्षेप नहीं करता है। संदेह किसी भी सिद्धान्त के खिलाफ तुरन्त उत्तेजित होता है जो किसी भी चीज के "देने" की मांग करता हैं।

जैसे कि यह उदार भावना मजबूत हो गई है, कलीसिया के कई सदस्यों ने कलीसिया से उखाड़ फेके गये उच्च आध्यात्मिक मानको को कम कर दिया है। कलीसिया और दुनिया के बीच के व्यापक अंतर से स्पष्ट रूप से शर्मिंदा, और "अजीब" अल्पसंख्यक होने के सामाजिक कलंक को पूरा करने के लिये तैयार नहीं, इन सदस्यों ने मसीही मानको के क्षेत्र में अपने समझौते को सही ठहराने की मांग की है। वे अक्सर तर्क देते हैं कि कलीसिया संर्कीण और कानूनी है और कई सही लोगों को कलीसिया द्वारा इसमें शामिल होने से हतोत्साहित किया जा रहा है।

अगर ये शिकायतें वैध है तो कलीसिया के सिद्धान्तों में कुछ बुनयादी बदलाव करने की जरूरत है। यदि वे मान्य नहीं है, तो

हमें यह जानने की सख्त आवश्यकता है कि उनकी सच्ची बाईबल समायोजन में मसीही आचरण के मानको को कैसे प्रस्तुत किया जाये। दूसरे शब्दों में हमें निश्चित रूप से स्थापित करना चाहये कि क्या ये नियम ईश्वर द्वारा या कलीसिया द्वारा बनाये गये थे। हमें यह भी पता लगाना चाहिये कि क्या वे मनमाने निषेध हैं या हमारी खुशी के लिये, परमेश्वर के प्रेमपूर्ण नियम है।

व्यक्तिगत आचरण के किसी भी पूर्ण कानून के खिलाफ लोकप्रिय विद्रोह के विपरीत हमें करना चाहिये। सामान्य रूप से मसीही जीवन और विशेष रूप से नैतिकताके विषय में बाईबल के तथ्यों पर विचार करें कि परमेश्वर के वचन के मानकों के साथ व्यक्तिगत स्वतन्त्रता के लिये ये मोडेम कितनी संगत के हैं। आइये मान ले कि सच्ची बाईबल की स्थिति स्वर्ग से एक स्वर्गदूत के सभी प्रेम और अनुनय के साथ प्रस्तुत की जा सकती है। क्या सच किसी को भी स्वीकार करने में आसान होगा?

आइये देखते है, शाश्वत जीवन के लिये लेह पथ सहजता का एक नरम, फूलों वाला रास्ता नहीं हैं। यीशु ने इतने सारे ग्रंथो में जोर दिया है कि हम इसके लिये अन्धे नहीं है। उसने कहा "क्योंकि सकेत है वह फाटक और कठिन है वह मार्ग जो जीवन को पहुँचता है और थोड़े हैं जो उसे पाते हैं।" (मत्ती 7:14)। मसीही होने के सबसे पहले सिद्धान्तों में से एक आत्म इन्कार है। मसीही ने कहा, "यदि कोई मेरे पीछे आना चाहे, तो अपने आप से इंकार करे और प्रतिदिन अपना क्रूस उठाये मेरे पीछे हो ले। (लूका 9:23) मसीही होने के लिये पूर्ण समर्पण शामिल है। मोती और व्यापारी के दृष्टान्त से पता चलता है कि हमें अनन्त जीवन

के उस जबरदस्त पुरूस्कार को प्राप्त करने के लिये हर एक चीज का निवेश करने के लिये तैयार रहना चाहिये। अगर हम किसी एक व्यक्ति को हमारे बीच आने की अनुमति देते है और मसीह की इच्छा करते है तो हमें बचाया नहीं जा सकता है।

क्या हम शिष्यत्व की कीमत में छूट देने के दोषी है ताकि लोगों को ऐसा महसूस न हो, रास्ता बहुत संर्कीण प्रतिबन्ध है? यीशु ने कहा, "तो फिर इसी प्रकार तुममें से कोई भी जो अपनी सभी सम्पत्तियों का त्याग नहीं करता, मेरा शिष्य नहीं हो सकता है" (लूका 14:33)। अमीर युवा शासक को यीशु ने बताया था कि उसके पास स्वर्ग की तैयारी में केवल एक चीज की कमी है लेकिन वह चीज को करने को तैयार नहीं था। उसे बचाने के लिये अपने धन को आत्मसमर्पण करना होगा लेकिन वह इसे देने के लिये तैयार नहीं था। उसे प्रभु से अधिक किसी और से लगाव था और वह दुखी होकर चला गया। मसीह की स्थिति इस बिन्दु पर इतनी मजबूत थी कि उसने यहाँ तक कहा, "वह जो मुझसे अधिक पिता या माता को प्यार करता है, वह मेरे योग्य नहीं हैं। (मत्ती 10:37)

अब मेरा मानना है कि हमें पुरूषों और महिलाओं के लिये मसीह के दावों को पेश करने के लिये सबसे शुरूआती सबसे कुशल और प्यार करने वाले तरीके की खोज करनी चाहिये। लेकिन मेरा यह भी मानना है कि इससे बहुत कम फर्क पड़ेगा कि इसे कैसे प्रस्तुत किया जाय। अगर व्यक्तियों को प्रभु यीशु के लिए कोई प्रेम नहीं है। तो गलती संदेश के साथ नहीं होती है, कुछ गलती उपदेशकों के साथ होती है, जिस तरह से वे इसे प्रस्तुत

करते हैं लेकिन अधिकांश दोष शिकायत के रवैये में निहित है, मसीहत की सत्य के खिलाफ विद्रोह महसूस करता है क्योंकि इसके लिये आत्म-अस्वीकार की डिग्री की आवश्यकता होती है।

मुझे यह बतलाने दीजिये कि व्यक्तिगत भावनाओं और दृष्टिकोण किस तरह से दुनिया में सभी अन्तर कर सकते हैं। विवाह सबसे प्रतिबंधात्मकक अनुभव है कि कोई भी इंसान अपनी मसीह के प्रति आध्यात्मिक प्रतिबद्धता से अलग इस दुनिया में स्वेच्छा से इस दुनिया में आ सकता है। आदमी अपने कई पूर्व लगाव और प्रथाओं को आत्मसमर्पण करने का वादा करता है। वह अन्य लड़कियों से मिलने की स्वतंत्रता देता है, और पूरी तरह से अपने जीवन के बाकी हिस्सों के लिये खुद को बांधता है। दुल्हन भी इसी तरह की प्रतिबंधात्मक प्रतिज्ञायें करती है, जो उसकी भक्ति करने के लिये अन्य सभी को त्यागने के लिये सहमत होते हैं। तो विवाह प्रतिज्ञा निस्संदेह संकीर्ण और कठोर प्रतिबद्धता वह अपने जीवन काल में बना सकता है। यदि प्रतिबंध और नियम इतने दुखद है, तो शादियों को सभी संबंधितों के लिये सबसे दुखी अनुभव होना चाहिये। लेकिन ऐसा नहीं है। वे सबसे खुशहाल कार्यक्रम हैं। क्यों? क्यों दुल्हन इतनी उज्जवल है क्योंकि वह दुल्हें से दूर अपने जीवन को गिरवी रखने के लिये खड़ी है? आदमी अपने जीवन के बाकी हिस्से के लिये अपनी गतिविधियों को बाधित करने वाले वादे करने में कितना खुश हो सकता है। इनके उत्तर सरल है। एक दूसरे से प्यार करते है। यह एक दूसरे के प्रति उनका दृष्टिकोण और भावना है जो प्रतिबंधों को स्वीकार करने के लिये एक खुशी बनाता है।

क्या आपने कभी समारोह के बाद किसी दुल्हन को कोई भी शिकायत करते सुना है, शायद किसी ने भी नहीं। उसे कड़वा कहते सुना है, "अब मैं जिम और एन्डी से नहीं मिलती। यह सही नहीं है। राज्य मुझे अपने पति के प्रति वफादार हाने के लिये बाध्य कर रहा है। यह विवाहित व्यवसाय बहुत अधिक प्रतिबंधात्मक है।" नहीं आपने ऐसा नहीं सुना है। अगर वह व्यभिचार करती है, तो वह सार्वजनिक रूप से दुल्हन की निंदा करने के लिये तैयार है, लेकिन वह ऐसी संभावना के विषय में सोचती भी नहीं है। वह प्यार में है और प्यार सब कुछ बदल देता है। सजा या फटकार के डर से वह वफादार नहीं रही है। वह वफादार है क्योंकि वह उस व्यक्ति को खुश करना चाहती है जिसे वह बहुत प्यार करती हैं

इस दुनिया में सबसे दुखी पुरूष और महिलायें वे हैं जो विवाहित है और अब एक दूसरे से प्यार नहीं करते है। यहाँ पृथ्वी पर लगभग सचमुच नरक है। वे उन पर प्रतिबंध और प्रतिबंधों के बारे में शिकायत करते हैं। इसी तरह, पूरी दुनिया में सबसे दुखी कलीसिया के वे सदस्य है जो बपतिस्मा के माध्यम से मसीह से शादी करते है और फिर भी उससे प्यार नहीं करते है। वे अक्सर अपने संकीर्ण, प्रतिबंधात्मक धर्म को लागू करने के लिये कलीसिया और उनके प्रशिक्षकों को कड़वाहट से दोषी ठहरा रहे है।

लेकिन क्या ये धर्म या पास्टरों का दोष है? सबसे दुख की बात यह है कि उन लोगो ने कभी भी व्यक्तिगत प्रेम सबंधों में प्रवेश नहीं किया है जो कि सभी सच्चे धर्म की अधारशिला है। उनमें से कई लोगो ने बाईबल अध्ययन के लिये सही पाठ सीखा

है, जो पिछले दिनों की घटनाओं के क्रम को समझाने में सक्षम है, लेकिन यीशु मसीह के साथ उनकी कोई व्यक्तिगत मुठभेड़ नहीं हुई है, कही न कही और शायद हर स्थान निर्जनता की तर्ज पर उन्हें सिखाया नहीं गया था, या स्वीकार करने का विकल्प नहीं चुना गया था, हृदय धर्म का सही आधार। यह नियमों या सिद्धान्तों की सूची का एक सेट नहीं है, लेकिन यीशु मसीह के साथ एक प्रेम सम्बन्ध में गहरी व्यक्तिगत भागीदारी है।

कलीसिया का सदस्य होने के लिये लाखों मसीहियों के साथ कठिनाई उनका मकसद है। उनके पास आग से बचने का धर्म है। वे कुछ चीजें केवल इसलिये करते हैं क्योंकि वे सड़क के अन्त में आग से डरते हैं। वे भय से प्रभु की सेवा करते हैं क्योंकि वे आग की झील में डाले जाने के बारे में सोचते है और कापते है। कोई आश्चर्य नहीं कि वे लम्बे समय से सामना कर रहे हैं और दुखी है। सच का क्या मलाल! मसीही दुनिया में सबसे खुशहाल लोग होने चाहिये- नवविवाहितों की तुलना में भी अधिक खुश, क्योंकि वे शादी का स्थान छोड़ देते है। अपनी पत्नी और परिवार से प्यार करने पर भी मसीही को प्रभु से अधिक प्रेम करना चाहिये।

क्या आपको लगता है कि एक घर खुश हो सकता है अगर पत्नी प्रत्येक दिन अपने पति की पंसदीदा भोजन तैयार करती है क्योंकि उसे डर है कि वह उसे तलाक दे सकता है। इन तनाव के तहत सांसरिक सम्बन्धों का पतन होगा।

वह अपने पति को खुश करने के लिये वो व्यंजन तैयार करती है क्योंकि वह उससे प्यार करती है जब उसका जन्मदिन आता है। मसीही पति अक्सर इस बात का संकेत देखते और सुनते है

कि उनकी पत्नी क्या करना चाहती है और आम तौर पर वह उसे जानने के लिये उसके सिर पर नहीं मारता है, वह खुशी से उसे उपहार खरीदता है क्योंकि वह उससे प्यार करता है और उसे खुश करना चाहता है। उसी तरह, प्रभु को खुश करने के तरीको की खोज के लिये मसीही प्रतिदिन वचन की खोज करेगे। वह लगातार चिन्हों और संकेतो की तलाश में रहेगा कि जिसे वह प्यार करता है किस प्रकार से उसे खुश करेगा। 20 वीं शताब्दी में हम बाइबल के अनुवाद को हम इन शब्दों में पढ़ते हैं - "हमेशा यह परखो की प्रभु को क्या भाता है।" (इफिसियों 5:10)। एक मसीही के लिये वास्तव में क्या आदर्श वाक्य है! सचमुच, यह उन लोगों की सर्वोच्च इच्छा है जो प्रभु से प्यार करते है। कोई आश्चर्य नहीं कि मसीह ने पहले नियम की तालिका का सारांश प्रस्तुत किया है इन शब्दों में "तू अपने परमेश्वर यहोवा से पूरे दिल से, और अपनी सारी आत्मा से और पूरे मन से प्यार कर यह पहली और बड़ी आज्ञा है।" (मत्ती 22:37-38)

असली कारण यह है कि कुछ मसीही नियमों का पालन करते है और सख्ती करते हैं क्योंकि उनके पास केवल दुःखी बनाने के लिये पर्याप्त धर्म है। मसीही "अनुभव" का दायरा निमयों को जीने के लिये निरंतर संघर्ष पर आधारित है कानून को बनाये रखने का प्रयास। अब निश्चित रूप से ईश्वर की आज्ञाओं को मानने में कुछ भी गलत नहीं है क्योंकि एक पति द्वारा पत्नी का समर्थन करने के लिये कानूनों का पालन करने से अधिक कुछ भी नहीं है। लेकिन अगर कानून की मांगे इसे मानने का एक मात्र कारण है, तो मसीही और पति के साथ कुछ गलत है। प्यार कानूनी भार

उठाता है और आनन्दमय बनाता है जो एक बोझ और तनाव हो सकता है।

तीन लड़को की मां एक भयानक संघर्ष कर रही थी जो अच्छे संस्कार और स्वच्छता के कानूनों को लागू करने की कोशिश अच्छी थी। सबसे छोटे लड़को की तरह, इन तीनों ने कानों को धोने, बालों में कंघी करने और जूते चमकाने के नियमों का विरोध किया। वह एक दैनिक लड़ाई थी जिसे मां ने केवल अधिकार और बल के लम्बे हाथ के माध्यम से जीता था। लेकिन एक दिन सबसे छोटा लड़का अपने शुरूआती किशोरावस्था में, अपने कमरे से बाहर निकलकर त्रुटिहीन नीरसता का मॉडल देख रहा था। हर बाल बिल्कुल सही जगह पर लग रहा था और अच्छी तरह से कफ के नीचे जूते पूर्णता से चमक रहे थे। मां लगभग बेहोश हो गयी। शायद ही उसके आश्चर्य और खुशी को दबाने में सक्षम हो, उसने समझदारी से घटनाओं के इस मोड़ के जबाव के लिये इन्तजार करने और और देखने का फैसला किया। पहेली का हल आने में अधिक समय नहीं लगा। "अगले दिन मां को पता चला कि एक नया परिवार पास ही के ब्लाक में चला गया था और उस परिवार में एक लड़की थी। शायद लड़की ने जॉनी को नहीं देखा था, लेकिन उसने पहले ही उसे देख लिया था और इसका गहरा असर इस पर पड़ा था। यह मत कहो कि ये प्यार था जिसने अच्छे संस्कार के नियमों के प्रति अपना दृष्टिकोण बदल दिया, लेकिन वह निश्चित रूप से मां के प्रवर्तन के डर से सफाई नहीं कर रहा था।

मुद्दा यह है कि मसीही जीवन केवल करने या न करने से नहीं बना है। इस अध्यात्मिक विवाह में, सुनिश्चित करे की जिस तरह

शारीरिक विवाह में वैसे ही प्रतिबंध है। लेकिन उन प्रतिबंधो को प्यार से लगाया जाता है जो हमेशा और हमेशा के लिये प्यार करते है। वो मसीही जो प्यार में है। मसीह अति उत्साही है, गवाह है कि यह सच्ची खुशी का तरीका है। दुर्भाग्य से, कलीसिया के सदस्यों का एक बड़ा समूह जो बुरी तरह से सहन कर रहे है कि आनन्दित होना चाहिये। वे कड़वाहट में है और शिकायत कर रहे हैं कि वे जो चाहते है, वैसा न खाते हैं या पहनते है। वे इस पर कलीसिया को बहुत सारी चीजों को "त्याग" देने के लिए निन्दा करते है। उनका धर्म बहुत हद तक सिर दर्द वाले व्यक्ति के समान लगता है। उसके सिर को काट देना नहीं चाहते है, लेकिन इसे रखने के लिये उसे चोट लगती है। उनके हर्षरहित रवैये से लगता है कि उनका धर्म उन सभी निषेधात्मक नियमों की समिति का उत्पाद है जिसमें सभी निषेधात्मक नियमों को शामिल किया गया है जो पुरूषों, महिलाओं और युवाओं को दुखी करते हैं।

लेकिन क्या ये सच है? उन आध्यात्मिक सिद्धान्तों के बारे में क्या जो सिद्धान्त बनाते है जिन्हें हम मसीही मानक कहते है। क्या ये एक मनमाना कलीसिया का कानून है कि किसी को थियेटर में नहीं जाना चाहिये? क्या यह परमेश्वर का निर्णय है या मनुष्य का निर्णय है कि आधुनिक नृत्य एक मसीह के लिये अनुचित है और रंगीन सौदर्य प्रसाधनों और गहनों के उपयोग के विषय में क्या ये ईश्वर को प्रसन्न करता है या अप्रसन्न करता है। सच्चाई ये है कि हमारे विश्वास और सिद्धान्त केहर बिन्दु को बाईबल में परमेश्वर की इच्छा के सिद्धान्त पर आधारित होना चाहिये। उसके लिये प्यार हमेशा सवाल प्रदान करेगा, मैं हमेशा

यह कैसे पता लगाने की कोशिश कर सकता हूँ कि प्रभु सबसे अच्छा क्या है।

उस प्रश्न का उत्तर बाईबल ग्रन्थों के पदों में मिलता है जो संकेत देते हैं कि कैसे उन्हे खुद के बजाय खुश किया जाये। वह किसी भी गतिविधि या अभ्यास से संबधित एकमात्र वास्तविक प्रश्न है, ईश्वर इसके विषय में क्या सोचते है? यह बात नहीं है कि यह उपदेशक या वह उपदेशक क्या क्या सोचता है?

इसके विषय में इस कलीसिया या उस कलीसिया का क्या विश्वास है, महान, सर्व-महत्वपूर्ण प्रश्न यह है क्या यह प्रभु को प्रसन्न करना या नाराज करना है। यदि हमें ऐसे ग्रन्थ मिलते है जिनसे पता चलता है कि ईश्वर को स्वीकार नहीं है तो वास्तविक मसीही के दिल में कोई और बहस नहीं होनी चाहिये। हम उसे बहुत प्यार करते हैं, उसे नाखुश करने के जोखिम में डालने के लिये। हमारी खुशी उन चीजों को खोजने और उन पर अमल करने की होनी चाहिये, जिन्हें हम प्यार करते है और अपने जीवन से उन चीजों को खत्म करना चाहते है जो उन्हें नाराज करती है।

जब लोग प्यार में होते है तो उन्हें एक-दूसरे को धमकाने या चेतावनी देने की जरूरत नहीं होती है। वे लगातार अपने प्यार को दिखाने और एक-दूसरे को खुश करने के तरीके खोजते है। जो मसीह की पहली और आखिरी आज्ञा का पालन करते है वे इसे बोझ नहीं समझते। परमेश्वर उन लोगो को खोज रहे है जो उसकी इच्छा के थोड़े से संकेत के प्रति संवेदनशील होगे। वह उन लोगों से प्रसन्न नहीं होता जिन्हें सजा के डर से लगातार लाइन में लगना चाहिये। ईश्वर कहते है, "मैं तुझे जैसे चलना चाहिये सिखाऊंगा

और तुझे वो राह दिखाऊंगा। मैं तेरी रक्षा करूंगा और मैं तेरा अगुवा बनूंगा। सो तू घोड़े या गधे जैसा बुद्धिहीन मत बन। उन पशुओं को तो मुखरी या लगाम से चलाया जाता है यदि तू उनको लगाम या रास नहीं लगायेगा तो वे पशु निकट नहीं आयेगें"। (भजन संहिता 32:8,9)

कई मसीही, "जैसे लगाम को काबू में रखना पड़ता उसी प्रकार के" अनुयायी है। वे केवल धमकियों का जबाव देते हैं और सजा के डर के कारण मानते हैं। ईश्वर कहते है, "मैं चाहता हूँ कि तुम मुझ पर एक नजर डालकर ठीक हो जाओ।" केवल वे ही जो उनसे प्रेम करते है और उनके आनन्द के संकेतो को देख रहे है और वे सुधार की प्रेममयी झलक को पहचानेगे। बाईबल को एक उद्देश्य से खोजना, यह जानने के लिये कि उसकी क्या इच्छा है। वे तुरन्त उसकी इच्छा के थोड़े से रहस्योद्घाटन का पालन करेगें। यह मूल मसीही धर्म का सार है। ये प्रेम के कारण उनकी प्रकट इच्छा के अनुरूप जीवन का हर स्तर का आदेश है।

अध्याय-2

रंगीन प्रसाधन सामग्री और आभूषण

मसीही मानको के स्थापित करने में प्रेरक कारक को प्यार करने के तरीके पर इस छोटी पृष्ठभूमि के साथ, अब हम यह बताने के लिये तैयार है कि सिद्धान्त व्यवहार में कैसे संचालित होता है। हालांकि, कलीसिया के "आचरण" मानको में से किसी का भी इस्तेमाल किया जा

सकता है। आइये हम एक ऐसा चुनाव करे, जिसमें काफी शिकायत- रंगीन सौंदर्य प्रसाधन और गहने शामिल है। ईमानदार सदस्यों के गुणकों ने इन कृत्रिम श्रृंगार के उपयोग को अलग रखा है, "क्योंकि कलीसिया ऐसा कहती है।" मसीही जीवन में कुछ भी ऐसा करना खराब कारण है। उम्मीद है कि इस अध्याय को पढ़ने के बाद इस विषय पर मनमाने ढंग से कलीसिया के नियमों के विषय में स्पष्टीकरण देगा। प्रभु को प्यार करने और प्रसन्न करने के आधार पर व्यक्तिगत विश्वास दिलायेगा है।

बार-बार पादरियों ने सवालों का सामना किया है। "मेरी शादी की छोटी अंगूठी पहनने में क्या गलत है? क्या आपको लगता है कि ईश्वर मुझे स्वर्ग से सिर्फ इसलिये छोड़ देगे, क्योंकि मैं इस छोटे से गहने को पहनता हूँ? "ईसाई धर्म के प्रति इस नकारात्मक दृष्टिकोण को लेकर कई अवसरों पर मेरा खुद का दिल खिन्न और परेशान हुआ है। कृपया ध्यान दे कि प्रश्न का क्या अर्थ है, प्रश्नकर्ता स्पष्ट रूप से यह जानना चाहता है कि वह इससे कितना प्राप्त कर सकता है और अभी भी उसे स्वर्ग प्राप्त हो सकता है। उनका रवैया केवल उन चीजों को करने की इच्छा को दर्शाता है जो दिव्य है, "इसे करो या और" कानूनों के रूप में रखी गयी है।

लेकिन मेरा दृष्टिकोण गलत है, गलत है, गलत है। सच्चा मसीही यह नहीं पूछेगा, "ईश्वर का बच्चा बने रहने के लिये मुझे कितना कुछ करना होगा।" बल्कि, मैं यीशु को खुश करने के लिये कितना कर सकता है जिसे मैं प्यार करता हूँ?" इसी प्रश्न पर ईश्वर की इच्छा की तलाश और उसे प्यार करने के लिये पर्याप्त रूप से प्यार करने पर आधारित सकारात्मक दृष्टिकोण है जैसा

कि पवित्र शास्त्र में खुशी से लिखा गया है। एक बार खुले दिल से प्यार करने वाला प्रेम स्वीकार कर लिया जाता है, इसे केवल पवित्र शास्त्र के माध्यम से खोज करना है, रंगीन सौंदर्य और आभूषणों के उपयोग के विषय में ईश्वर की इच्छा के संकेतों को खोजने के लिये। अब हम इसे करने के लिये आगे बढ़ेगे।

उत्पत्ति 35:1-4 में याकूब को परमेश्वर ने अपने परिवार को बेतेल ले जाने के लिये कहा था, जहाँ उन्हें प्रभु की वेदी पर प्रस्तुत करना था। याकूब के लिये यह एक बहुत ही पवित्र स्थान था। जहाँ पर आरंभिक दिनों में उसका परिवर्तन हुआ था, अपने सपने में स्वर्गीय सीढ़ी को देखने के बाद। लेकिन इससे पहले कि वे उस पवित्र स्थान पर अभिषेक कर सकें, याकूब ने अपने घरवालों से कहा, कि "उन अजीब देवताओं को हटा दो जो तुम्हारे बीच में है।" (पद 21) जाहिर तौर पर, परिवार ने भूमि में रहते हुये बुतपरस्ती के रीति-रिवाजों को अपना लिया था। वेदी पर कुछ ऐसी वस्तुये थी जिन्हें वेदी तक जाने से पहले अलग ध्यान देना था, क्योंकि वे मूर्तिपूजक वस्तुयें थी। कृपया ध्यान दे पद 4 में वस्तुयें क्या थी, "और उन्होंने याकूब सभी अजीब देवताओं को, जो उनके हाथ में दे दिया, झुमके जो उनके कानों में थे, याकूब ने उन्हें सिन्दूर के पेड़ के नीचे छुपा दिया जो शकेम के मार्ग में था। न्यायियों 8:24 में, हमें आश्वासन दिया गया है कि झुमके उन लोगो द्वारा पहने गये गहने थे जो इश्माएल से थे। संदर्भ का तात्पर्य यह है कि उन्होंने सच्चे ईश्वर अपने धर्म त्याग के निशान के रूप में गहने पहने थे उत्पत्ति 34 से पता चलता है कि याकूब के बेटे ने कुछ दुःखद पाप किये थे और याकूब परमेश्वर के सामने आ

रहा था कि वे उनके और उनके परिवार के लिये प्रायश्चित करें। यह हृदय की खोज और पश्चाताप का समय था। सब कुछ गलत-सही करने के लिये और उन पर ईश्वर के आशीर्वाद के लिये किया गया था। गहने पहनने का रिवाज अजीब देवताओं के साथ लिया गया था और उनसे छुटकारा पाने के लिये उन्होंने वो कान की बालियाँ और देवताओं को छोड़ दिया।

इसी प्रकार की परिस्थितियां निर्गमन 33:1-6 में भी थी और वहाँ भी इनका सुधार हुआ। पिछले अध्याय में एक भयानक धर्म त्याग विकसित हुआ जब कि मूसा दस आज्ञाओं को प्राप्त करने वाले पवर्त पर था। बड़ी संख्या में इज़रायलियों ने स्वर्ण बछड़े की पूजा की थी जिससे देश पर खतरा, प्लेग आया। मूसा ने उन्हें इन शब्दों के साथ पश्चाताप करने के लिये कहा, "आज के दिन यहोवा के लिये अपना याजकपद का संस्कार करो, वरन अपने अपने बेटों और भाइयों के भी विरूद्ध होकर ऐसा करो जिस से वह आज तुम को आशीष दे।" (निर्गमन 32:29)

अगले अध्याय में, मूसा लोगों के लिये ईश्वर से विनती करने के लिये उसके तम्बू के पास गया, जो अभी भी भोग और पाप के दिन से अपने भारी जाल में थे। इन्हें अनुदेश ईश्वर ने इज़रायल की बहाली के लिये दिया पोशाक का एक बदलाव शामिल है, जैसा कि पहले था।

याकूब और उसके परिवार के मामले में ईश्वर ने कहा, इज़रायलके बच्चों से कहो "तुम एक हठी लोग हो, यदि मैं एक क्षण में तुम्हारे बीच यात्रा करू तो में तुम्हें खत्म कर दूंगा, इसलिये अपने गहनों का त्याग करो जिससे मैं निश्चय करूं कि मुझे क्या

करना है। और इज़रायलियों ने अपने-अपने गहनो को होरब पहाड़ पर त्याग दिया। (निर्गमन 33:5,6)

हमें उन आभूषणों को पहनने के विषय में, ईश्वर के रवैये के बारे में, किसी भी प्रकार का सन्देह नहीं है। ईश्वर, जो नहीं बदलता है, ने उनसे कहा कि वे उन चीजों को हटा दे और अपने धर्म त्याग का जबाव देने के लिये खुद को निर्णय के लिये प्रस्तुत करें। यह ध्यान देने योग्य है कि यह निषेध वचनबद्ध भूमि में जाने के सम्बन्ध में रखा गया था। ईश्वर ने कहा मैं तुम्हारे सामने एक दूत भेजूंगा, और मैं कनानियों, अमोरियों को बाहर निकाल दूंगा, क्योंकि मैं तुम्हारे बीच में नहीं जाऊँगा क्योंकि तुम एक जिद्दी प्रकार के लोग हो। (निर्गमन 33:2,3) यह महत्वपूर्ण है कि वादा किये गये भूमि में प्रवेश करने से पहले उन्हें अपने गहने उतारना आवश्यक था। क्या इससे हमारा कोई लेना देना है? वास्तव में यह है। पौलुस ने हमें 1 कुरिन्थियों 10:11 में आश्वासन दिया है कि "ये सभी बाते उन पर दृष्टान्त की रीति पर थीं और वे हमारे चेतावनी के लिये जो जगत के अंतिम समय में रहने के लिये लिखा गया है।

लाल सागर के अनुभव को पद 2 में बपतिस्मा के लिये पसन्द करते है और पद 7 और 8 में निर्गमन 32 में इज़रायल के महान धर्म त्यागी अनुभव का उल्लेख करते हैं, जब उन्होंने एक सुनहरा बछड़ा बनाया। फिर तुरन्त वह श्लोक 11 में बताते है कि ये बाते जो उनके साथ हुई वे "हमारे चेतावनी" के लिये थी। इसका मतलब केवल यह हो सकता है कि परमेश्वर उनके धर्मत्याग पर उसका उनके साथ व्यवहार करना, हमें कुछ सिखाना है। जिस प्रकार

इजरायलियों को कनान देश में जाने से पहले आभूषणों को त्यागने की आज्ञा दी गयी थी उसी प्रकार हमारे स्वर्गीय कनान में जाने से पहले यह करना है। संदर्भ में समानांतर स्पष्ट है। रंगीन सौंदर्य प्रसाधनों के उपयोग के सम्बन्ध में सबसे पहले रिकार्ड 2 राजा 9:30 में पाया गया है, कई ने अभिव्यक्त की उत्पत्ति पर सवाल उठाया है "जेजेबले की तरह चित्रित।

इसका उत्तर इस ग्रन्थ में मिलता है, "और जब येहू यिज्रेल के पास आया तब इजेबेल ने उसके बारे में सुना, और उसने अपना चेहरा चित्रित किया, और बालों को पीछे करके खिड़की से बाहर देखा" इतिहास से हमें पता चलता है कि कुख्यात मूर्तिपूजक रानी ने सैकड़ो भविष्यवक्ताओं को मौत के घाट उतार दिया है, पवित्र शास्त्र के छात्रों के लिये अच्छा से जाना जाता है। ईजेबल के रिवाज बाइबल मूल का पता लगाने के लिए निश्चित रूप से अभ्यास पर एक अपवित्र छाया डालता है लेकिन हम एक क्षण देखते हैं कि रंगीन प्रसाधनों का प्रयोग बाईबल के रिकार्ड में बुतपरस्त महिलाओं और बेवफा महिलाओं का एक सुसंगत निशान है।

भविष्यवक्ता यशायाह, ईश्वर ने पवित्र शास्त्र में कभी भी पाये जाने वाले सबसे डरावनी भर्त्सनाओं में से एक भेजा है। कही भी हम आभूषणों के पहनने के प्रति ईश्वर की भावनाओं का अधिक प्रत्यक्ष और सुस्पष्ट रहस्योदघाटन नहीं पाते है। यशायाह 3:16 में, ईश्वर गहने के बारे में सामान्यीकरण नहीं करते है, लेकिन उन विशिष्टि लेखों की एक लम्बी सूची देते है जो "सिय्योन की बेटियों" द्वारा पहने जा रहे थे। अब आइये देखें कि क्या परमेश्वर

वही कल, आज और सदा के लिये इन चीजों के पहनने से प्रसन्न है परमेश्वर ने कहा, "क्योंकि सिय्योन की स्त्रियां घमंड करती और सिर ऊँचे किये, आंखे मटकाती और घुंघरूओं को छमछमाते हुये ठुमक-ठुमक चलती हैं ... इस लिए प्रभु यहोवा उनके सिर को गंजा करेगा, और उनके तन का उधरवाएगा, उस समय प्रभु घुंघरुओं, जालियों, चन्द्रहारों, झुमकों, कड़ा घूंघटों, पगडियों, पैकरियों, पटुकों, सुगंधपात्रों, अंगूठियों, नथों को दूर करेगा। (यशायाह 3:16-21)

आइये इस सस्वर अध्याय के बीच में रूके और प्रश्न करे, ईश्वर इन चीजों को कैसे दूर करेगे, अगले अध्याय में पद 4 में हम पढेगे।

"जब प्रभु ने सिय्योन की बेटियों की गंदगी को धोया होगा ... न्याय की भावना से और जलाने की भावना से। इस तथ्य को नजर अंदाज न करे कि ईश्वर इन सभी वस्तुओं को "गंदगी" के रूप में मानते हैं। वह सबसे अधिक रेखांकन का वर्णन करता है, जो आभूषण की "धुलाई दूर" से बचते है, "उसी समय इजरायल के बचे हुओ के लिये यहोवा की डाली, भूषण और महिमा ठहरेगी, और भूमि की उपज बड़ाई और शोभा ठहरेगी। और जो कोई सिय्योन में बचा रहे और येरूशेलेम में रहे अर्थात येरूशलेम में जितनों के नाम जीवन पत्र में लिखा हों, वे पवित्र कहलायेंगे।" (यशायाह 4:2,3)

बहुत स्पष्ट और निडर होकर नबी ने गहने पहनने में गर्व की अभिव्यक्तियों के लिये ईश्वर की घृणा को प्रकट किया। उन कृत्रिम गहनों को धोने के बाद, ईश्वर ने महिलाओं को "सुहावनी"

"पवित्र" और "सुन्दर" होने के रूप में वर्णित किया। जाहिर है, वह उसी तरह से सौंदर्य का मूल्यांकन नहीं करता है जिस तरह से हम करते है। महिलाओं ने खुद को सुन्दर बनाने के लिये अपने सारे गहने पहन लिये, लेकिन ईश्वर ने कहा कि यह गंदगी थी। जब यह सब धुल गया, तो उन्होंने कहा कि वे बहुत सुहावनी और सुन्दर थी। इस सत्य के चरम महत्व को मत भूलो। ईश्वर उस शब्द का प्रयोग "सुहावनी" से करते हैं। कलीसिया, उसकी दुल्हन का वर्णन करने के लिए। "मैंने सिय्योन की बेटी की तुलना एक सुन्दर और नाजुक महिला से की है। (यिर्मयाह 6:2)

जैसे कि उनके लोगों ने प्रदर्शित अत्यधिक गर्व के उनके आकलन को दृढ़ करता है, ईश्वर ने निम्नलिखित अवलोकन किया, "उनके चेहरे की झलक उनके खिलाफ गवाही देती है, और वे अपने पाप को सदोम घोषित करते है, वे इसे छिपाते नहीं है। उनकी आत्मा पर शोक है। क्योंकि उन्होंने अपने आप को बुराई का बदला दिया है" (यशायाह 3:9)। किसी प्रश्न को अनुचित श्रृंगार की शर्मनाकता के बारे में रहने की अनुमति नहीं है।

इस बिन्दु पर ध्यान देना अच्छा होगा कि ईश्वर ने अंगूठियों को सिय्योन की बेटियों की गंदगी के भाग के रूप में पहचानना। वह किस तरह के छल्ले की बात कर रहा था? हाई स्कूल सीनियर तुरन्त जवाब देगे, "मेरी कक्षा में अंगूठी मेरे वरिष्ठ होने का प्रतीक है। यह एक आभूषण के रूप में नहीं पहना जाता है। ईश्वर अन्य प्रकार के छल्ले के बारे में बात कर रहे थे।" सोनार लगभग उसी कारीगरी अंगूठी की रक्षा करेगा। "ईश्वर मेरी अंगूठी के बारे में बात नहीं कर रहे थे, ये केवल मेरे स्थान से सम्बन्धित मेरा प्रतिनिधित्व

करता है।" और फिर जन्म के छल्ले संगाई के छल्ले और शादी के छल्ले है-उनके प्रतीकात्मक अर्थ भी है। हम जो पहन रहे हैं, उसे सही ठहराना कितना आसान है और यह दावा करना कि ईश्वर की बात नहीं थी। लेकिन हम कैसे जानते है कि ईश्वर ने जो पहना है उसके बारे में बात नहीं कर रहे थे? क्या यह महसूस करना उचित नहीं होगा कि ईश्वर हमारे द्वारा अंगूठी पहने हुये व्यक्ति के लिये एक उपवाद बनाता है सिर्फ इसलिये कि हम इसे छोड़ना नहीं चाहते है?

जब उसने कहा, "छल्ले" क्या उसका मतलब केवल निश्चित प्रकार के छल्ले थे?

मैंने एक दिन अपनी माँ से भी ऐसा ही सवाल किया। तुम देखों, मेरी माँ ने कहा, जब केक पर आइसिंग ठंडी हो जाये तो उसके टुकड़े को तोड़ कर मत लेना। मुझे केक के डिब्बे के तल में जो कुछ माँ ने छोड़ा था, उसे खुरच कर "पैन चाटने" की अनुमति दी गई थी, परन्तु केक को नहीं हटा सकता था।

लेकिन एक दिन माँ स्टोर में गयी और मुझे मेज के बीच में एक सुन्दर ताजे बने चॉकलेट केक के साथ अकेला छोड़ गयी। मैं ने केक के किनारे स्वादिष्ट आइसिंग देखी और प्लेट के रिम पर इक्ट्ठा किया। प्रलोभन बहुत महान था और मैंने जल्दी से अपनी उंगली पर सब लेने की कोशिश की लेकिन जल्दी से नहीं कर पाया। बस उसी क्षण माँ द्वार पर आ गयी।

मेरा विश्वस करो, माँ ने मुझे बहुत जल्दी से बेडरूम में बन्द कर दिया, जब कि मैं ने अपरिहार्य को पहले से ही रोकथाम करने की कोशिश की। मुझे अब भी सजा से बचने के लिये अपनी बात

याद है। माँ ने कहा, "मैं ने आपको बताया कि केक की कभी भी आइसिंग नहीं निकालनी चाहिये।" विजयी होकर मैंने जवाब दिया, "लेकिन आपने चॉकलेट केक नहीं कहा।"

किसी तरह, मेरी बुद्धिमान माँ किशोर तर्क के उस कम से कम ध्वनि से प्रभावित नहीं थी। मुझे आश्चर्य है कि जब हम कहते है, तो यह हमारे सभी बुद्धिमान स्वर्गीय पिता के लिये कैसा लग सकता है, "लेकिन आपने शादी की अंगूठी नहीं कहा" और यह सच है। माँ ने सिर्फ केक और ईश्वर ने सिर्फ "छल्ले" कहा। ईश्वर की प्रकट इच्छा के हमारे स्पष्ट उल्लंघन का औचित्य साबित करने के लिये एक बचकाना प्रयास किस तरह का है, इस पर टाल - मटोल।

आखिर हम इस विषय को पवित्र शास्त्र में क्यो खोज रहे है? क्या हम यह पता लगाने की कोशिश नहीं कर रहे हैं कि सबसे अच्छा ईश्वर को क्या खुश करता है? हम उन तरीकों के लिये नहीं खोज रहे हैं जो उन्हें प्रसन्न करते हैं। हमारा एकमात्र उद्देश्य यह करने के लिये उसकी इच्छा को खोजना है। हम उसे बहुत प्यार करते हैं उसे जोखिम में डालने के लिये 1 प्रतिशत यही है कि सच्चा मसीही ईश्वर की इच्छा के विपरीत जाकर इस तरह की मांग करने में वंचित नहीं रहेगा और न ही तर्कशक्ति की तलाश करेगा। सभी छल्लों को अलग रखें। कितना सरल है कि जिसे हम पहन रहे है उसका हम स्पष्टीकरण कर रहे है कि ईश्वर इसके विषय मे बात नहीं कर रहा है। हमे शादी के शारीरिक चिन्ह पहनने के लिये कोई पवित्र शास्त्र में मिसाल नहीं मिलती है। शादी की अंगूठी का इतिहास बुतपरस्त, धूप-पूजा और अंधविश्वास के साथ है।

कोई भी तर्क अपने पक्ष में नहीं रखता है, एक महान तथ्य की तुलना में किसी भी भार को वहन करता है कि यह प्रभु को प्रसन्न नहीं करता है। एक सांसारिक मसीही तर्क दे सकता है कि यह स्पष्ट नहीं है कि एक अंगूठी पहनने के लिये वो खो जायेगा। लेकिन जो मसीही ईश्वर से बेहद प्यार करता है, वह जवाब देगा कि यह जानना पर्याप्त है कि यह हमारे मित्र को नाराज करता है।

संयोग से इतिहास हमें प्रारंभिक कलीसिया धर्मत्यागी और शादी की अंगूठी की शुरूआत के बीच सम्बन्धों की एक बहुत स्पष्ट तस्वीर देता है। प्रसिद्ध कैथोलिक कार्डिनल, जॉन हेनरी न्यूमैन ने 1845 में अपनी स्मारकीय पुस्तक डेवलपमेंट ऑफ क्रिज़ियन डॉक्ट्रिन पृष्ठ 373 में इसका वर्णन किया था। "कांस्टेंटाइन, ने नये धर्म की सिफारिश करने को बतुपरस्ती में स्थानान्तरित किया गया, जिसमें से वे अपने आप के आदी हो गये थे। ऐसे विषय में जानना जरूरी नहीं है, जिसे प्रोटेंस्टट लेखकों के परिश्रम ने घनिष्ठ बना दिया है। हम में से अधिकांश मंदिरों का उपयोग करते हैं, और ये विशेष रूप से संतों को धूप अर्पित करते है, मोमबत्तियां पवित्र जल जुलूस शादी में अंगूठी, पूर्व की ओर मुड़ना, पिछली तारीख में चित्र ... बुतपरस्त मूल के है" और पवित्र चर्च में उनके गोद लेने से। (जोर दिया गया) भविष्यवक्ता यिर्मयाह, पुराने नियम के लेखकों की तरह कृत्रिम गहने पहनने वाले लोगों के प्रकार के बारे में और अधिक सलाह दी। ईश्वर उन पवित्र पुरूषों में समा गये जो एक महिला के रूप में कलीसिया का प्रतिनिधित्व करते है। जब परमेश्वर के लोगों को पीछे छोड़ दिया गया तो उन्हें नबी ने एक वेश्या या बेवफा

पत्नी के रूप में चित्रित किया। इस प्रकार हम निम्नलिखत ग्रन्थों को पढ़ते है, "जब तू उजड़ेगी, तब क्या करेगी? चाहे तू लाल रंग के वस्त्र पहिने और सोने के आभूषण धारण करे और अपनी आंखो में अंजन लगाये परन्तु व्यर्थ ही तू अपना श्रृंगार करेगी। क्योंकि तेरे मित्र तुझे निकम्मी जानते है, वे तेरे प्राणों के खोजी है।" (यिर्मयाह 4:30)

येहजेकल के माध्यम से, परमेश्वर ने अपने प्रेरित लोगो यहूदा और इजरायल को दो वेश्याओं ओहोला और अहेलिबा द्वारा प्रतीक दिया। उनके निर्भीक अलंकरण के उनके वर्णन ने उनके आचरण की शिष्टता का मिलन किया। "उन्होंने दूर से पुरूषों को बुलवा भेजा और वे चले भी आये। उनके लिये तू नहा, धो, आंखो में अंजन लगा, गहिने पहिनकर" (यहेजेकेल 23:40)

जब वह इजरायल के पांखड का वर्णन करता है, तो होशे उसी विचार को व्यक्त करता है फिर से बेईमानी को एक सजी हुई महिला द्वारा अच्छी तरह से नाटक किया गया। "वे दिन जिन में वे बाल देवताओं के लिये धूप जलाती, और नथ और हार पहने अपने यारों के पीछे जाती और मुझ को भूले रहती थी, उन दिनों का दण्ड मैं उसे दूंगा, यहोवा की यही वाणी है। (होशे 2:13)

बार-बार पवित्र शास्त्र रंगीन सौंदर्य प्रसाधनों और गहने पहनने को पाप, धर्मत्याग और मूर्तिपूजावाद से जोड़ता हे। जब वे यहोवा से दूर हो गये, तो उन्होंने उन गहनों को रख दिया जो यशायाह ने कहा था, "अपने पाप की घोषणा करो" उन ग्रन्थों की कोई कमी नहीं है जो सत्य को स्पष्ट रूप से और बिना संतुलन के फैलाते है- स्वर्ग के महान ईश्वर उन चीजों से नाराज थे और

उनका उपयोग उनकी इच्छा से प्रस्थान का प्रतीक करने के लिये किया था।

नये नियम को और मुड़ते हुये दृश्य और भी अधिक स्पष्ट हो जाता है। यहून्ना, प्रकाशितवाक्य की पुस्तक में, पाप के लाल कपड़े में सुसज्जित स्त्री के विषय में वर्णन करता है। झूठी कलीसिया के तौर पर "सोने और कीमती पत्थरों और मोतियों के साथ अलंकृत, उसके हाथ में एक सुनहरा प्याला, जो घृणा से भरा हुआ है और उसके व्यभिचार की अशुभ वस्तुओ से भरा था। (प्रकाशितवाक्य 17:4)

इसके विपरीत सच्ची कलीसिया को प्रकाशितवाक्य 12:1 में दर्शाया गया है, क्योंकि एक खूबसूरत महिला सूर्य की महिमा के साथ कपड़े पहने थे, इस महिला को प्रकाशिवाक्य 21:9 में मसीह की दुल्हन कहा जाता है। ध्यान दे कि कोई भी गहने मसीह की दुल्हन द्वारा नहीं पहने जाते है इस प्रकार के सच्चे और झूठे धार्मिक सिस्टम भी अनुमान लगाते है कि ईश्वर ने कृत्रिम श्रृंगार के उपयोग के लिये किस प्रकार की जगह बनाई है।

पतरस और पौलूस के लेखन के दो अंतिम ग्रन्थ इस अभ्यास के बारे में शुरूआती कलीसिया के दृढ़ सुसंगत विचारों को प्रकट करेंगे। शिष्यों के बीच इन दोनो दिग्गजों ने प्रभाव के पदों पर कब्जा कर लिया और आत्मा से भरे अक्षर अपोस्टोलिक कलीसिया के अनापत्ति दृष्टिकोण का प्रतिनिधित्व करते हैं। "वैसे ही स्त्रियां भी संकोच और संयम के साथ सुहावने वस्त्रों से अपने आप को संवारे न कि बाल गूंथने, और सोने और मोतियों और बहुमूल्य कपड़ो से, पर भले कामों से, क्योंकि

परमेश्वर की भक्ति करने वाली स्त्रियां को यही उचित भी है।" (1 तिमुथियुस 2:9, 10)

पतरस ने उसी तरीके से लिखा, सिवाय इसके कि उन्होंने विशेष रूप से उन मसीही महिलाओं को संबोधित किया जिनके पति पर अविश्वास था। "हे पत्नियों तुम भी अपने पति के अधीन रहो, इसलिये कि यदि इनमें से कोई ऐसा हो जो वचन को न मानते हो, तौभी तुम्हारे भय सहित पवित्र चाल चलन को देखकर बिना वचन के अपनी-अपनी पत्नी के द्वारा खिंच जाये।

तुम्हारा श्रृंगार दिखावटी न हो, अर्थात बाल गूथंना, और सोने के गहने या भांति-भांति के कपड़े पहनना, वरन् तुम्हारा छिपा हुआ और गुप्त मनुष्यत्व, नम्रता और मन की दीनता की अविनाशी सजावट से सुसज्जित रहे, क्योंकि परमेश्वर की दृष्टि में इसका मूल्य बड़ा है।" (1 पतरस 3:1-4)

पतरस के इन शब्दों में आज कलीसिया की प्रत्येक मसीही पत्नी की सलाह है और वे उन सब विकराल समस्याओं से जूझते है, जिनका सामना उन मसीही महिलाओं को करना पड़ता है, जिनके पति विश्वास में उनके साथ नहीं है। विश्वास करने वाली पत्नी को अपने पति को खुश करने की कोशिश में कितनी दूर जाना चाहिये? घर में चीजों को सुचारू रखने के लिये और संभवतः अपने पति को जीतने में मदद करने के लिये उसे किन चीजों में ईश्वर की सच्चाई से समझौता करना चाहिये। पतरस की सलाह सरल और स्पष्ट है, सच्चाई और सिद्धान्त से बिल्कुल भी समझौता न करें। यहाँ तक कि अगर पत्नी को अपने विश्वास के बारे में बोलने की अनुमति नहीं है तो वह अपने पति को

"पवित्र बातचीत" से जीत सकती है। अन्य अनुवाद "वार्तालाप" के बजाय "व्यवहार" शब्द का अधिक उचित उपयोग करते है।

लेकिन ध्यान दे कि मसीही पत्नी का आचरण कैसे स्वयं प्रकट होगा। पतरस ने बलपूर्वक कहा कि वह अपने पति को बाहरी तौर पर श्रृंगार करके बहुत आसानी से जीत लेगी। निश्चित रूप से ईश्वर की आत्मा ने दुविधा की आंशका जताई। पत्नी जो महसूस करती है कि उसे अपने पति को खुश करने के लिये शादी की अंगूठी पहनने की जरूरत है, भले ही वह जानती हो कि यह प्रभु को खुश नहीं करता। इस पाठ से यह स्पष्ट हो जाता है कि ईश्वर को पहले आना चाहिये और इस प्रकार का निर्णय भी पति को किसी भी अन्य पाठ्यक्रम से जीतने के लिये अधिक करेगा। सैकड़ो प्रचारक और पादरी इस बात का गवाह बन सकते हैं कि यह सच है। महिलायें जो अंततः अपने पति को विश्वास में लेती है, वे है जो परमेश्वर के वचन को मानने के लिये दृढ़ता से पकड़ते हैं। जो अपने साथियों को नहीं जीतते है वे, वे है जो अपने अविश्वासी पति के साथ कम संगत चीजों में मानक को कम कर देगे।

यह विरोधाभासी लग सकता है, लेकिन व्यवहारिक परिणाम प्रर्दशनकारी है। जब तक पत्नी अपने स्वयं के विश्वास के सभी बिन्दुओं पर नहीं चल रही है, पति का कहना है कि यह बहुत महत्वपूर्ण नहीं होना चाहिये। वह कुछ ऐसा करने के लिये उत्साहित नहीं हो सकता है जो अपनी प्यारी मसीही पत्नी के पूर्ण अनुपालन का दावा नहीं करता है अगर वह अपनी खुद की नाराजगी के बावजूद भी दूसरो से ऊपर ईश्वर को खुश करने के लिये दृढ़ रूख अपनाती है, तो पति इस बात से प्रभावित होता है

कि यह "धर्म थोड़ा" महत्वपूर्ण होना चाहिये। वह शायद अपनी सच्ची भावनाओं के बारे में कुछ नहीं कहेगा। वास्तव में, महान आक्रोश को प्रभावित कर सकता है, लेकिन उसके सम्मान और प्रशांसा गुप्त रूप से उसकी पत्नी के दृढ़ ईमानदार रूख से उभरेगी।

हमें यही अनुमान लगाना चाहिये कि यह तर्क पत्नियों द्वारा उन्नत है जो अपनी शादी के छल्ले के साथ भाग लेने के लिये इच्छुक नहीं है। वे कहते है, "मैं अपनी अंगूठी नहीं छोड़ना चाहता, क्योंकि यह दर्शाता है कि मैं शादीशुदा हूँ। मुझे अपने पति पर गर्व है। मैं चाहती हूँ कि हर कोई यह जान सके कि शादीशुदा है। मुझे लगता है कि शादी सबसे पवित्र और महत्वपूर्ण है। कोई भी इन ईमानदार भावनाओं के साथ गलती नहीं कर सकता है। हर पत्नी को अपने पति से प्यार करना चाहिये और उस पर गर्व करना चाहिये। शादी महत्वपूर्ण है और हर किसी को यह जानना चाहिये कि वह शादीशुदा है। लेकिन चलिए हम एक प्रश्न पूछें, "क्या किसी व्यक्ति के जीवन में ऐसा कुछ है जो शादी से अधिक महत्वपूर्ण है? हां, सिर्फ एक चीज है जो अपने पति या पत्नी से शादी होने से ज्यादा महत्वपूर्ण है, और वह है मसीह से शादी करना। मसीह के प्रेम के दावे ही एकमात्र दावे है जिन्हें कभी भी पति-पत्नी के प्रेम पर प्राथमिकता देनी चाहिये। सभी भारी बाईबल सबूतों के प्रकाश में हमने पाया है कि आभूषणईश्वर को नाराज कर रहे है। यह सच है कि शादी की अंगूठी सभी को बतायेगी पत्नी अपने पति से शादी कर रही है लेकिन यह कुछ और भी बतायेगा। यह बतायेगा कि उसने प्रभु यीशु से ऊपर अपने पति को खुश करने के लिये चुना है। प्रभु यीशु के ऊपर भी

यह प्रकट करेगा। इससे यह पता चलेगा कि वो किसकी इच्छा ईश्वर की इच्छा के ऊपर रख रही है। इस प्रकार ये विश्व के लिये एक गलत गवाही देता है।

कुछ को आपत्ति हो सकती है कि ऐसा निष्कर्ष बहुत मजबूत है। कुछ कहने के लिये बाध्य है, "आप एक अगूठी या आभूषण जैसी छोटी चीज द्वारा मेरी मसीहत का न्याय और परीक्षण कर रहे है" नहीं ऐसी बात नहीं है। ये परमेश्वर के लिये प्यार है जिसका परीक्षण किया जा रहा है, और बाईबल स्पष्ट रूप से परीक्षण के मापंदंडो को इंगित करती है। उस परीक्षा में न केवल ईश्वर की स्पष्ट रूप से प्रकट आज्ञाओं को शामिल करना है, बल्कि उन सभी चीजों को अलग करना भी शामिल है जिससे हमें पता चलता है कि वह उसे खुश नहीं करता है। यहां सबूत है, "और जो भी हम मांगते हैं, हम उसे प्राप्त करते हैं, क्योंकि हम उसकी आज्ञाओं को मानते है, और उन चीजों को करते हैं जो उसकी दृष्टि में मनभावन है। (1 यहून्ना 3:22)

कृपया उन दो चीजों को नजर अन्दाज न करें जो सच्चे मसीही हमेशा करते है। ईश्वर की आशा मानने वाले की आवश्यकताओं को मानने वाले प्रत्यक्ष, अतिदेय का पालन करते हैं लेकिन वे हर उस चीज की खोज करते हुये आगे बढ़ते है, जो उन्हें प्रसन्न करेगी। दूसरे शब्दों में वे निषेधाज्ञा का पालन करेगें, "और यह परखो की प्रभु को क्या भाता है" (इफिसियों 5:10, 20वीं शताब्दी का अनुवाद) यीशु ने अनुकरण किया और अपने जीवन और शिक्षाओं में इस दिव्य सिद्धान्त को नाटकीय रूप दिया। उसने कहा, "पिता ने मुझे अकेला नहीं

छोड़ा क्योंकि मैं यीशु उन चीजों को करता हूँ जो उसे खुश करती है। (यहून्ना 8:29)। मनमाने आदेशों को एक सांसारिक व्यक्ति के लिये भी स्पष्ट किया जाता है लेकिन ईश्वर को खुश करने वाली छोटी-छोटी बाते केवल उस मसीही के प्यार भरे दिल के सामने आती है जो अपनी इच्छा के संकेत के लिये शब्द खोजता है। यह एक महत्वपूर्ण तथ्य है कि जिन लोगों को यीशु के आने पर बचाया जायेगा, वे हनोक के प्रतीक हैं जिन्हें "अनुवाद किया गया था कि उन्हें अपने अनुवाद से पहले मृत्यु को नहीं देखना चाहिये, उनके पास यह गवाही थी कि उन्होंने ईश्वर को प्रसन्न किया" (इब्रानियों 11:5) पॉलूस 1 थिस्सलुनिकियों 4:16 में यीशु महिमामय आगमन का वर्णन करता है। उसी पाठ में वह धर्मी मरे हुओं के पुनरूत्थान और धर्मी जीवन को पकड़ने का चित्रण करता है। लेकिन उन संतो के बारे में बोलते हुये जिन्हें अनुवाद के लिये तैयार होना चाहिये, पॉलूस ने कहा, "मैं आपको प्रभु यीशु द्वारा पुकारता हूँ। आपको कैसे चलना चाहिए और ईश्वर को प्रसन्न करना चाहते हैं। (1 थिस्सलुनिकियों 4:1) जो लोग धरती से छुड़ाये जाते हैं उनमें से एक चिन्ह हर चीज में प्रभु को खुश करने की उनकी इच्छा है।

सुनो, अगर तुम जानते हो कि एक निश्चित वस्तु प्रभु को भाती है, फिर भी तुम इसे करने से इन्कार करते हो तो तुम वास्तव में क्या कर रहे हो। आप किसी और को खुश कर रहे हैं ईश्वर के अतिरिक्त आप कह सकते है, "कि ये इतनी छोटी सी बात है"। बेशक, यह एक छोटी सी बात है, लेकिन प्यार वास्तव में एक दूसरे के लिये की गई छोटी-छोटी चीजों में परखा जाता है और

साबित होता है। किसी भी गृहिणी से पूछे कि क्या ऐसा नहीं है। उनके पति उन्हें उनके जन्मदिन पर एक वाशिंग मशीन देते हैं और वह उसकी सराहना करेगी। लेकिन अगर वह सप्ताह के मध्य में फूल लाता है और कहता है, प्रिय, मुझे यह बर्तन सुखाने दे।" कोई भी पत्नी आपको बतायेगी इसका मलतब वाशिंग मशीन से अधिक है। क्यों, क्योंकि यह छोटी चीजों को करने के लिये उसकी सच्ची भावनाओं का अधिक खुलासा करता है जो अधिक रूप से कम अपेक्षा वाले बड़े करने के लिये करता है। जब हम उनकी दस आज्ञाओं को मानते हैं तो ईश्वर प्रसन्न होते है, लेकिन हम वास्तव मेंआज्ञाओं से परे जाकर बाईबल में प्रकट की गई छोटी-छोटी चीजों मे उन्हें प्रसन्न करने के लिये अपने प्रेम को और अधिक दिखाते है।

सही और गलत कही नहीं रहा। और कभी नहीं, राशि द्वारा मापा जाना चाहिये। यह पाप का गुण है, परिमाण नहीं, जो मसीही के लिये सबसे बड़ी समस्या है। "बाईबल इस तथ्य को बताती है कि रंगीन सौन्दर्य प्रसाधन अगूंठियॉ आदि ईश्वर को नाराज कर रहे है। परमेश्वर का वचन यह नहीं बताता है कि रंगीन सौन्दर्य प्रसाधनों की एक निश्चित मात्रा गलत है या एक निश्चित प्रकार या छल्ले की संख्या उसके लिये नाराजगी है। यहाँ तक कि सबसे छोटा उल्लंघन परमेश्वर की प्रकट इच्छा गम्भीर है। पहले ईश्वर को रखने के खिलाफ एक अन्दरूनी विद्रोह को इगित करता है। आज शैतान का पंसदीदा तर्क, "थोड़ा सा ठीक है।" "जब उसे स्वर्गदूतों द्वारा पहाड़ो में भागने का आदेश दिया था, तब उसकी बहस मूर्खतापूर्ण थी। उसने सदोम और गमोरा के निकट एक

अन्य शहर में जाने की अनुमति मांगी। उसका तर्क था, "क्या यह छोटा नहीं है?" (उत्पत्ति 19:20) क्या आप समझ सकते है कि सदोम में अपना सब कुछ गवाने के बाद भी वह दूसरे शहर में क्यो जाना चाहता था? फिर भी उसी तर्क शक्ति का प्रयोग आज बहुत से मसीही करते है। वे बहस और टाल मटोल करते हैं अंगूठी के आकार या राशि के बारे में बेशर्मी से बात करते है।

शैतान यह सुनकर खुश हो जाता है कि लोग यह तय करने की कोशिश कर रहे हैं कि उन्हें परमेश्वर की इच्छा का कितना उल्लंघन करना चाहिये। इसे कभी न भूले। यह महत्वपूर्ण है, लेकिन यह तथ्यंकी डिग्री नहीं है जो इतना महत्वपूर्ण है, लेकिन यह तथ्य है कि एक विचलन है जो वास्तविक समस्या का गठन करता है। कदम का आकार सबसे बड़ी बात नहीं है बल्कि वह दिशा जिसमें कदम आगे बढ़ता है।

कभी-कभी मंत्रियों पर शादी की अंगूठी के बाहर एक बड़ा मुद्दा बनाने का आरोप लगाया जाता है क्योंकि वे बपतिस्मा लेने से पहले उम्मीदवार को इसे हटाने की प्रतीक्षा करते है। दरअसल, अनुभव ने यह साबित कर दिया है। अंगूठी समस्या नहीं है। अंगूठी केवल एक बहुत अधिक गम्भीर समस्या का लक्षण है, पूर्ण आत्मसमर्पण की कमी। जब दिल की उपज होती है, और जीवन में सबसे पहले ईश्वर को रखा जाता है तो कोई भी धर्मान्तरित व्यक्ति बपतिस्मा द्वारा मसीह के शरीर के साथ एक जुट होने के तरीके में छोटी सी अंगूठी को खड़ा नहीं होने देगा। जब मसीह के लिये प्रेम स्वयं या पति या पत्नी के प्यार से अधिक

मजबूत होता है तो कुछ भी चीजें रास्ते में नहीं आयेंगी, कम से कम सभी छोटी धातु की अंगूठी।

अध्याय-3
रुकावटें

इस अंतिम अध्याय में हम इस विषय पर पवित्र शास्त्र के साक्ष्य के एक अन्य पहलू पर विचार करेंगे जो कुछ के लिये सबसे अधिक प्रेरक दिये है। यह उन लोगों द्वारा गये आक्षेपों का जबाव देता है जो अभी भी इस बात से सहमत नहीं है कि गहने ईश्वर को नाराज कर रहे है। सबसे स्पष्ट तरीके से यह शादी की अंगूठी के लिये रक्षा के आखिरी गढ़ को भी ध्वस्त कर देता है।

इस बिन्दु पर पॉलूस के वाकपटु प्रवचन में जाने से पहले, आईये हम एक ऐसे तथ्य को स्थापित करे, जो उन सभी के लिये भली-भांति जाना जाता है जो पूर्ण कालिक आत्मा जीतने में लगे हुये हैं। जो कलीसिया के सदस्य बनने के बाद अपने गहने पहनने में लगे रहते है, इच्छुक आत्माओं के मार्ग में ठोकर को रखने के लिए जिम्मेदार है। लगभग कोई भी प्रचारक या पादरी उन पुरूषों और महिलाओं की कहानियों से आपका दिल तोड़ सकता है, जिन्हें कलीसिया के कुछ सदस्यों की असंगति से लगभग बपितस्मा में वापिस लाया गया था। मसीही मानकों के बारे में पूरी बाईबल के सच्चाई सिखाने के बाद, ये उम्मीदवार या और कभी-कभी कलीसिया के सदस्यों को अंगूठी या अन्य श्रृंगार

पहने हुये देखकर चौक जाते है। अधिकतर लोग निराश होकर चले जाते हैं और कलीसिया में शामिल होने से इन्कार कर देते हैं।

किसी को आपत्ति है, "ठीक है, उन्हें लोगों को इतना नहीं देखना चाहिये। सत्य को स्वीकार करना चाहिये क्योंकि यही सच्चाई है। यह बहुत अच्छा सच है, लेकिन बस याद रखे कि हम उन आत्माओं से निपट रहे है जो बाइबल के आस पास के अलोकप्रिय संदेशों की खामियों को धैर्यपूर्वक खोजने में लगे है और हमारा फर्ज है कि हर खामियों को धैर्यपूर्वक बंद करे और हर तर्क को पूरा करें ताकि वे अन्त में पूरी आज्ञाकारिता में आत्म समर्पण करें। तथ्य है कि इन लोगो को कलीसिया में इस उम्मीद का अधिकार है कि वह क्या उपदेश देता है। कुछ असंगत सदस्य पादरी की ओर से प्रार्थनापूर्ण अध्ययन और उम्मीदवारों की तैयारी के महीनों का मुकाबला कर सकते है यह सही नहीं है कि किसी दूसरे व्यक्ति को ठोकर लगनी चाहिये। पॉलूस ने उन लोगो के लिये सबसे गम्भीर चेतावनी दी जो अपने मसीही विकास में एक आत्मा को हतोत्साहित करेगे "आईये हम एक दूसरे को किसी भी प्रकार का न्याय न करने, दे लेकिन इसक बजाय यह जांच करे कि कोई भी व्यक्ति अपने भाई के रास्ते में आने के लिये ठोकर न खाये।" (रोमियों 14:13) यीशु ने एक ही विषय पर बात की, सिवाय इसके कि उन्होंने एक बच्चे को ठोकर खाने के कारण का वर्णन किया। शायद इनके शब्दों का हमारे लिये अधिक अर्थ होगा यदि हम उन्हें बच्चों के सब्बत स्कूल के शिक्षको को ध्यान में रखते हुये पढ़े। "पर जो कोई इन छोटों में से जो मुझपर विश्वास करता है, उनमे से एक को अपमानित करेगा, यह उसके लिये

बेहतर था कि उसके गले में एक चक्की का पत्थर लटका दिया जाता ताकि वह समुद्र की गहराई में डूब जाये।" (मत्ती 18:6) गम्भीर शब्द वास्तव में लेकिन यह अपराध से अधिक गम्भीर नहीं है- उदाहरण के रूप में शिक्षकों को देखने वाले छोटे बच्चों के बारे में भ्रामक। पंसदीदा शिक्षक की ऊंगली, अंगूठी देखने के बाद कितनी बार छोटी लड़कियों ने रिंग के बारे में पवित्र शास्त्र के मानको पर सवाल उठाये है?

एक विशेष कलीसिया में बच्चों के शिक्षक जिसने शादी की अंगूठी पहनी थी, उसके विभाग की छोटी लड़की को मूर्ति बना दिया था। कलीसिया की सेवा के दौरान बच्चो को अकसर शिक्षक और उसके पति के साथ बैठने की अनुमति होगी। चूंकि उनकी अपनी कोई सन्तान नहीं थी इसलिये रंग बिरंगे कास्मेटिकस और ज्वेलरी के जोड़े को अच्छी तरह से व्यवहार करने छोटी लड़की के साथ बैठकर खुशी हुई। वह आमतौर पर शिक्षक के पर्स में मौजूद चीजों के साथ खुद को कैद कर लेती थी, लेकिन एक स्नेही स्वभाव की होने के कारण, वह अपने शिक्षक के साथ ज्यादा समय तक रहती थी। धर्म सभा के दौरान हर सबत के दिन, महिला ने छोटी लड़की की ओर देखा कि शादी की अंगूठी उसकी ऊंगली से फिसल गई और उस लड़की ने छोटी ऊंगली में पहन लिया। कुछ परेशान होकर उसने अंगूठी वापस पा ली और उसे अपनी ऊंगली पर वापिस डालने दिया।

सप्ताह दर सप्ताह तक, उसके चिड़चिड़ेपन के लिए बहुत कुछ उसने देखा कि कैसे अंगूठी के साथ छोटे बच्चे का कितना जुनूनी लग रहा था। वह शौकीन थी और अंगूठी को सहलाती

थी और अकसर इसे विनीत रूप से हटाने की कोशिश करती रहती थी ताकि वह इसे अपनी बचकानी उंगलियों के आस-पास खिसका सके। गोल्डन सर्कल के लिये छोटी लड़की के बढ़ते आकर्षण ने वृद्ध महिला के लिये एक बढ़ती चिन्ता बन गई। अलंकारों के बारे में पवित्र शास्त्र की शिक्षाओं को जानने के बाद उसकी अन्तरात्मा उस समय से सहज नहीं थी जब से उसने अंगूठी पहनना शुरू किया था। प्रार्थना सभा का आनन्द लेने में असमर्थ थी। क्योंकि उसने सजावट से लड़की का ध्यान हटाने की कोशिश की।

अन्त में वह इसे सहन नहीं कर पायी। गहरे विश्वास के तहत कि वह बच्चे के रास्ते में रूकावट डाल रही थी जो उसने उस अपमानजनक अंगूठी को हटा दिया। उस अनुभव को पादरी को बताया और अपराध की भावनाओं का वर्णन किया जिसने उस निर्दोष छोटी लड़की के चेहरे के सामने प्रलोभन देने के लिये पीड़ा दी।

लेकिन अंगूठियों मे कुछ भी गलत नहीं दिख रहा है। मुझे एक पांखडी क्यों होना चाहिये और किसी को प्रभावित करने के लिये उन्हें छोड़ देना चाहिये? यह एक ऐसा प्रश्न जिसका जवाब पॉलूस 1 कुरिन्थियों 8:1-13 विनाशकारी प्रभाव से देता है। सम्पूर्ण अध्याय मूर्तियों को दिये जाने वाले खाद्य पदार्थो की समस्या से सम्बन्धित है। प्रारम्भिक कलीसिया को इस मुददे पर गम्भीरता से विभाजित किया गया था। अन्यजाति मसीही जो बुतपरस्ती से आये थे उनका मानना था इस प्रकार के मांस को खाना गलत था। इन्होंने मूर्तियों को यज्ञ में भोजन अर्पित करना

याद किया। हालांकि अब वे मसीही थे, फिर भी उन्हें लगा कि यह किसी तरह से मूर्ति को खाना खिलाने के लिये निष्ठा दे रहे हैं। दूसरी ओर यहूदी मसीही जो यहूदी धर्म से कलीसिया में आये थे उन्होंने महसूस किया कि भोजन खाने के लिये पूरी तरह से अच्छा था। चूंकि भोज "अशुद्ध" नहीं था और चूंकि इसे बाजार में अन्य मीट के साथ बेचा गया था इसलिये यहूदी मसीहियों ने इसे विवेक के कोई प्रश्न ही नहीं लाए।

दो समूह के बीच विवाद इतना गम्भीर हो गया कि आखिर में पॉलूस को निपटना पड़ा 1 कुरिन्थियों 8 में इसकी लम्बाई है। इस मामले में उसके निर्णय पर गौर करे, "जैसा कि इन चीजों का खाने के बारे में है जो मूर्तियों के बलिदान में दी जाती है। हम जानते है कि एक मूर्ति दुनिया में कुछ भी नहीं और यह कि कोई और नहीं है ईश्वर केवल एक है। किसी भी तरह से खरपतवार ना होने की वजह से आप की यह स्वतंत्रता कमजोर हो जाती है। जिन वस्तुओं को मूर्तियों को अर्पित किया जाता है, और आपके ज्ञान के माध्यम से कमजोर भाई नष्ट हो जायेगा, जिनके लिये मसीह ने अपनी जान दी? लेकिन जब तू भाईयों के खिलाफ ऐसा पाप और उनके कमजोर विवेक पर घाव करते हो तो तुम मसीह के खिलाफ पाप करते हो। (पद 4-12)

ये अद्भुत पद दूसरो के लिये प्यार पर अपने आध्यात्मिक ध्यान के साथ, उन लोगों पर भी अधिक बल के साथ लागू होते है जो कलीसिया में अंगूठी पहनने के लिये स्वतंत्रता महसूस करते हैं। यह आवेदन अधिक मजबूत है क्योंकि आभूषण ईश्वर की निन्दा करते हैं जब कि मूर्तियों को चढ़ाये गये मांस की निन्दा नहीं

की गई थी। फिर भी पॉलूस ने कहा कि यह एक पाप था। ऐसा खाना खायें क्यांकि यह किसी और के लिये ठोकर या रूकावट थी। क्योंकि अंगूठियां मसीही लोगो के लिये रूकावट है इसी प्रकार अन्य जातियों के लिये भी है, इसलिये हम इस निष्कर्ष से नहीं बच सकते कि ऐसा अपराध मसीह के खिलाफ पाप भी है।

यह हमे इस छोटी सी पुस्तक-प्रेम के केन्द्रीय विषय पर वापस लाता है। चाहे हम ईश्वर को प्रसन्न करने और अपने पड़ोसी से प्रेम करने के दृष्टिकोण से मसीही मानको को देख रहे हो या परिणाम केवल एक ही है। सम्पूर्ण विचार स्वंय को अंतिम रूप देना है। इस प्रकार के प्यार पर आधारित एक धर्म केवल दस आज्ञाओं के पत्र को पूरा करने के लिये सन्तुष्ट नहीं होगा, लेकिन उसकी इच्छा के संकेतो के लिये प्रतिदिन ईश्वर के शब्द की खोज करेगा जैसा कि यहून्ना हमें याद दिलाता है, "हम? उसकी आज्ञाओं और उन चीजें को करते है जो उसकी दृष्टि में मनभावने हैं (1 यहून्ना 3:22)।

क्या आप इस बिन्दु तक पढ़ चुके हैं, इससे संबधित एक प्रश्न पूछ सकता हूँ? क्या इसने आभूषण पहनने पर संदेह जताया है? क्या पवित्र शास्त्र के माध्यम से बिखरे हुये इन सभी आयतों के प्रमाण से पता चलता है कि अभ्यास प्रश्नों के लिये खुला है? एक जोड़े ने कहा "हमें अभी तक आश्वासन नहीं है कि ईश्वर हमें गहने का एक टुकड़ा पहने हुये स्वर्ग से बाहर रखेगा।" मैंने उनसे पूछा था "भले ही आपको ऐसा न लगे कि आप इसे पहन कर खो जायेगे, क्या कई ग्रन्थ ईश्वर की पूर्ण स्वीकृति के अभ्यास के विषय में कम से कम कुछ प्रश्न उठाते है?" हॉ "उन्होंने कहा, "हम यह नहीं कह सकते कि उस मुददे से अभी स्पष्ट नहीं है।"

"मेरा अगला सवाल यह था, "क्या आपको लगता है कि 10% संभावना है कि आपकी अंगूठी पहनने से ईश्वर नाराज हो सकते है?" एक पल सोचने के बाद वे दोनो सहमत थे कि कम से कम इतना मौका था कि यह संदग्धि था। तब मैंने उनसे ये प्रश्न पूछा "जैसा कि आप बपतिस्में के कगार पर खड़े है और अपने जीवन का पूरा समर्पण प्रभु यीशु को देते है, क्या आप प्रभु को विस्थापित करने के लिये 10% मौका पर चलाना चाहते है। चूंकि उसने आपके लिये अपनी जान दी हैं।

आहिस्ता से उन्होंनें अपनी अंगूठियाँ उतारनी शुरू की। नहीं हम थोड़ा सा भी अवसर नहीं चाहते कि परमेश्वर को नाराज करें। हम सदा यीशु के साथ जाना चाहते हैं अगर कोई शक है तो हम उसे संदेह का लाभ देगें।

मैं यह ढोंग करने की कोशिश नहीं करूंगा कि इस तरह का समर्पण आसान है। यीशु ने कहा, "यदि कोई आदमी मेरे पीछे आयेगा, तो उसे खुद से इन्कार करने दो, और रोज अपना क्रूस उठाकर मेरे पीछे आने दो। (लूका 9:23) स्वयं को "नहीं" कहना गुरू जिसके विषय में बाते कर रहे हैं। वह कह रहा था कि हर एक को इस बात से लड़ना होगा कि वह स्वयं को समर्पण नहीं करना चाहता। व्यक्तिगत रूप से जो मसीह के पास आ रहा है और उसके तरीके सीख रहा है, उसे स्वयं को नकारना होगा और उसे "नहीं" कहना होगा, जिसे उसकी पूरी प्रकृति रखने के लिये तरसती है इस का मतलब आत्मवंचना है। कुछ लोग एक बिन्दु पर परीक्षण में विफल होते हैं और अन्य एक अलग बिन्दु पर। मैंने कुछ ऐसे लोगो को देखा है जो पैसे के मामले में खुद को नकार

नहीं सकते। परमेश्वर की आज्ञा मानने से उनकी नौकरी खतरे में पड़ सकती हैंया उनका वेतन कट सकता है, और वे अपने पैसे के प्यार के लिये "नहीं" कहने को तैयार नहीं थे। दूसरो को मसीह का अनुसरण करने के लिये सभी तरह से जाने के लिये दोस्तो को छोड़ना पड़ा और वे खुद को अपने दोस्तो से इन्कार करने के लिये तैयार नहीं थे। भोजनेच्छा कई लोगों के रास्ते में अड़चन पैदा करती है, जो पवित्र-शास्त्र में आवश्यक शराब, तम्बाकू या अशुद्ध खाद्य पदार्थो से इन्कार नहीं करना चाहते थे। कुछ ने घंमड और गर्व के बिन्दु पर परीक्षण को विफल कर दिया है। वे खुद को पोशाक के गर्व से इन्कार करने के लिये तैयार नहीं है।

यह देखना सदा दिलचस्प होता है कि सच्चाई कैसे लोगों से एक प्रचारक को दर्शको से मात दिलाता है। जब तक हम ईश्वर के दावों को प्रस्तुत नहीं करते है, तब तक कोई भी जीवन और व्यवहार को बदलने की मांग नहीं करता है। अगर हम परमेश्वर की सभी सलाह का प्रचार नहीं करे तो अधिकतर श्रोता खुशी-खुशी जवाब देंगें। संघर्ष तब होता है जब सत्य स्वयं भोग को चुनौती देता है। सब्बत, दशमांश, और आहार के इसी परीक्षण आत्म प्रकृति के कुछ तत्व के उद्देश्य से है। इनमें से प्रत्येक बिन्दु पर कई असफल होते हैं। लेकिन अजीब तरह से सबसे बड़ी लड़ाई यह सुनिश्चित करने के लिये लगती है जब ईश्वर की इच्छा व्यक्तिगत गर्व के क्षेत्र को छूती है। घमंड गहरा और व्यापक है। आत्म-प्रेम के एक हजार चेहरे है और कई सूक्ष्म तरीकों से खुद को प्रदर्शित करत है।

इसे नीचे चिन्हित करे कही न कही हर आत्मा के लिये शैतान ईश्वर की इच्छा के खिलाफ आखिरी बार हताश करने के लिये स्वयं का उपयोग करेगा। केवल वे ही जो मसीह को अपने हृदय आत्मा और मन से प्यार करते है वे ही 100ः आत्म समर्पण करने में सक्षम या इच्छुक होगे जो उनके लिये आवश्यक है। दुनिया में सबसे खुशहाल लोग वे हैं जो हर चीज में ईश्वर को प्रसन्न करने के, अपने तरीके से कुछ नहीं करते है।

यह पहले ही उल्लेख किया गया है कि जो मसीही प्रभु को खुश करने के लिये रहते है, वे दुनिया के सबसे खुशहाल लोग है। यीशु ने कहा, "यदि तुम मेरी आज्ञाओं को मानोगे, तो तुम मेरे प्रेम में बने रहोगे, यहां तक कि मैंने अपने पिता की आज्ञाओं को भी माना है और उसके प्रेम का पालन करता हूँ। मैंने कुछ तुमसे कहा है, वह यह है कि "मेरा आनन्द तुम्हारे भीतर बना रहे, और आपका आनन्द पूर्ण हो सकता है।" (यहून्ना 15:10,11) कोई आश्चर्य नहीं। फिर भी पूरी तरह से प्रतिबद्ध मसीही इतनी आसानी से पहचाने जाते है। भीतर से एक पवित्र चमक और खुशी चमक रही है, यहाँ तक कि मुख्यमंडल भी बदल देती है। हालांकि उन्होंने दुनिया के अलंकरण को अलग रखा है उन्होंने आत्मा के एक और अलंकरण को रखा है जो तुरन्त पहचान देता है, कुछ महिलायें अपने गहने निकालने के बाद लगभग नग्न महसूस करती है, लेकिन बहुत जल्द वे पहचानती है कि ईश्वर ने कृत्रिम को असली के साथ बदल दिया है। दाऊद ने लिखा "उन्होंने उसे देखाऔर हल्के हुये, और उनके चेहरे शर्मिंदा नहीं थे।" (भजन संहिता 34:5)

यह नये जन्में मसीही का नया रूप है जिसने दुनिया को अंचभित कर दिया है। हर बुरी चीज जो छोड़ दिया गया, ईश्वर का बच्चा आध्यात्मिक प्रतिस्थापन प्राप्त करता है। जैसा कि पॉलूस ने कहा, "आइये इसलिये हम अंधकार के कामों को दूर करें और ज्योति के हथियार बांध ले।" (रोमियों 13:12) और कृपया ध्यान दे कि जब यह कपड़े किसी व्यक्ति के श्रृंगार और कपड़ा में शामिल होता है तो यह विनिमय नाटकीय हो सकता है। मसीह की दुल्हन को विशेष ध्यान दिया जाता है। यशायाह दुनिया के लोगों की पोशाक के साथ ईश्वर की लोगों की शादी की पोशाक के विपरीत वर्णन करता है। मैं ईश्वर में बहुत खुशी मनांऊगा, मेरी आत्मा मेंरे ईश्वर में खुश होगी, क्योंकि उसने मुझे मोक्ष के वस्त्रों से ढंक दिया, उसने मुझे धार्मिकता के से ढंक दिया। एक दुल्हे के रूप में खुद को गहने के साथ, और एक दुल्हन के रूप में खुद को अपने गहने के साथ सजाती है।क" (यशायाह 61:10) जब हम मसीह से शादी करते है और उसका नाम लेते है, तो हम सांसारिक दूल्हा और दुल्हन के रूप में सजाया नहीं करते है। हम खुशी से "मोक्ष के वस्त्र" और "धार्मिकता के बागे" के साथ तैयार हो रहे है। यह वह है जो चेहरे को प्रदीप्त करता है और दुनिया को आश्चर्य चकित करने वाली नई उज्जवल उपस्थिति प्रस्तुत करता है।

"इस महत्वपूर्ण बिन्दु पर सावधानीपूर्वक विचार किया जाना चाहिये।" चेहरे एक व्यक्ति के चरित्र और अनुभव के विषय बहुत कुछ कहता है। हमारे सबसे महत्वपूर्ण मसीही गवाह बस हमारे चमकते हुये मुखयमंडल हो सकते है। रंगीन सौन्दर्य प्रसाधनों के उपयोग के विरोध मे,ं मैं ने जो सबसे ठोस तर्क दिये है, उनमें

से एक इस तथ्य पर आधारित था। प्रसिद्ध कैथोलिक लेखक फ्रांसिस पार्किंसन कीज ने बताया कि उन्होंने कृत्रिम श्रृंगार के साथ अपने चेहरे या बालों को कभी "छुआ तक" क्यो नहीं है, "एक चौथाई सदी के जीवन में एक महिला के चेहरे पर कुछ झुर्रियों के अलावा बहुत कुछ डाल देना चाहिये, ठोड़ी के चारो ओर सिलवटें। उस समय की लम्बाई में वह दर्द और खुशी, खुशी और दुख, जीवन और मृत्यु से परिचित हो गई है। उसने संघर्ष किया है और बच गई है, असफल और सफल हुई है।

उसने खोया और पुन: विश्वास पाया। और उसके परिणाम स्वरूप उसे समझदार, सौम्य, अधिक धैर्यवान और उससे अधिक सहिष्णु जब वह छोटी थी। उसकी समझ में परिपक्व होना चाहिये, उसका दृष्टिकोण बड़ा होना चाहिये, उसकी सहानूभूति गहरी होनी चाहिये थी। और यह सब दिखाना चाहिये। यदि वह उम्र की छाप को मिटाने की कोशिश करती है, तो वह नष्ट होने का जोखिम उठाती है, उसी समय, अनुभव और चरित्र की छाप। (प्रेरणा के शब्द, पृष्ठ 198)

उस कथन में एक जबरदस्त सच्चाई निहित है मसीही महिलाओं के पास उनके चेहरे की अभिव्यक्ति के लिये गवाह है। ईश्वर में धार्मिकता, गरिमा, पवित्रता और शांत विश्वास- ये गुण अक्सर अकेलेपन में स्पष्ट रूप से प्रकट होते है। शायद यही यीशु का मतलब था जब उसने कहा, "अपने प्रकाश को पुरूषों के सामने चमकने दें, ताकि वे आपके अच्छे कामों को देख सके, और अपने पिता की महिमा कर सके जो स्वर्ग में है" (मत्ती 5:16) एक आलौकिक चेहरे का आध्यात्मिक प्रकाश और चमक एक

दर्जन उपदेशों या बाईबल अध्ययनों की तुलना में यीशु मसीह के धर्म की ओर अधिक ध्यान आकर्षित करता है।

हमारे कृत्रिम श्रृंगार के विषय पर हमने काफी समय बिताया है ताकि यह प्रदर्शित किया जा सके कि ये पवित्र शास्त्र की ओर कैसे ले जाता है ताकि हम यह खोज कर सके कि प्रभु को क्या भाता है।

हम केवल मसीही मानकों के अन्य उदाहणों का उपयोग कर सकते है। यह वही सिद्धान्त है जो हमे उत्तेजक, नृत्य, फिल्में, जुआ, आहार और पोशाक के विषय में जो कुछ भी करते है, उसे खुश करने की प्रेरणा प्रदान करता है। यह स्पष्ट रूप से दिखाया जा सकता है कि कलीसिया के यह उच्च मानक पुरूषों को किसी भी समिति पर आधारित नहीं है, लेकिन उनके वचन में ईश्वर की प्रकट इच्छा पर। ईश्वर हमे हमारी सबसे बड़ी खुशी और उन चीजों को करने में, खुशी पाने में सहायता करे जो उन्हें खुश करती है।

AMAZING FACTS

India

हमारी मुफ़्त बाइबिल अध्ययन पाठ्यक्रम को ना चूकें।

BibleStudy.AFTV.in

पर आज ही नामांकन करें!

अधिक मुफ़्त डिजिटल पुस्तकें खोजें

AFTV.in/Free-Book-Library

हिन्दी, तमिल, तेलगु, कई भाषाओं में उपलब्ध है ...

Post Box No. 51 • Banjara Hills
Hyderabad, TS 500034

www.AmazingFactsIndia.org